बाइबल टीचर

वर्ष 15 अगस्त 2018 अंक 9

सम्पादकीय

यीशु में विश्वास लाने के कई कारण हैं

पिन्तेकुस्त यहूदियों का एक त्योहार था और पतरस इस दिन कई राष्ट्रों से आये हुए लोगों को यीशु का प्रचार कर रहा था। यीशु परमेश्वर द्वारा भेजा गया एक सामर्थपूर्ण उद्धारकर्ता है। वह मनुष्य बनकर इस जगत आया ताकि लोगों को उनके पापों से मुक्ति दे सके। बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र बलिदान कर दिया। मैं आपको बताना चाहता हूं कि यीशु में विश्वास करने के कुछ विशेष कारण हैं। और यदि यह कारण न होते तो आज सारे संसार में यीशु के इतने अनुयायी न होते।

पतरस ने प्रचार करते हुए कहा था, "सो अब इस्त्राएल का सारा घराना जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी। तब सुनने वालों के हृदय छिद गये, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे कि हे भाईयो हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारी संतानों ओर उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। उसने बहुत और बातों से भी गवाही देकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ। और और जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए। (प्रेरितों 2:36-41) यहाँ हम देखते हैं कि उन लोगों को यह प्रचार किया गया कि परमेश्वर ने यीशु को प्रभु भी ठहराया और मसीह भी। यानि जो लोग प्रभु यीशु को ग्रहण करते हैं वह उनका उद्धारकर्ता बन जाता है। उसने यह प्रतिज्ञा की है कि वह उनका उद्धार करेगा।

आज जो लोग प्रभु यीशु में विश्वास नहीं करते उन्हें मैं बताना चाहता हूं कि यीशु में विश्वास करने के कुछ विशेष कारण हैं। हम देखते हैं कि पतरस ने जब लोगों को यीशु के विषय में बताया तो उसी दिन तीन हजार लोगों ने बपतिस्मा लिया। उन्होंने ज़रा भी इन्तज़ार नहीं किया। उसके चेले जो साथ-साथ रहते थे कुछ समय के लिये उसकी मृत्यु को देखकर वे भी हिल गये थे। परन्तु बाद में उसके प्रेरित यह जान गये थे कि उसे परमेश्वर की ओर से प्रभु भी और मसीह भी ठहराया गया है। अर्थात प्रभु यीशु सच्चा जीवता प्रभु है। यही कारण है कि आज लोगों को उद्धार पाने

के लिये प्रभु यीशु में विश्वास करना आवश्यक है क्योंकि यीशु के अतिरिक्त कोई और नाम नहीं है जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें। (प्रेरितों 4:12)।

कुछ कारणों को हम देखते हैं जो हमें यीशु में विश्वास करने को विवश करते हैं। एक बहुत बड़ा कारण है कि यीशु मसीह ने बहुत सारे आश्चर्यकर्म किये थे। पतरस ने अपने प्रचार में कहा था, "हे इस्राएलियों ये बातें सुनो, कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण सामर्थ के कामों और चिन्हों से प्रकट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो।" (प्रेरितों 1:22)। यह सब आश्चर्यक्रम यीशु ने लोगों के सामने किये और लोगों ने अपनी आंखों से देखे थे तब संदेह करने वाली कोई बात नहीं थी। (प्रेरितों 26:26)। एक स्थान पर हम ऐसे पढ़ते हैं कि यीशु ने कहा था कि "जाकर यूहन्ना से कह दो कि अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते-फिरते हैं; मुर्दे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।" (मत्ती 11:34-5)। उसने तूफान को शांत कर दिया। (मत्ती 8)। हम जानते हैं कि मृतक लाजरस को उसने जीवित कर दिया था। (यूहन्ना 11) और भी बहुत सारे अद्भभुत कार्य उसने किये जो इस पुस्तक या बाईबल में नहीं है (यूहन्ना 20:30-31)। यीशु के पास एक विशेष सामर्थ थी जो उसे परमेश्वर की ओर से मिली थी। और यही कारण था कि लोगों ने उसमें विश्वास किया।

यीशु में विश्वास करने का एक विशेष कारण यह भी है कि उसके बारे में जो भविष्यवाणियां हुई थी वे सब पूरी हुई। यहूदी लोग एक मसायाह का इंतजार कर रहे थे। पतरस ने योएल भविष्यदूक्ता की भविष्यवाणी के विषय में बताया था। (प्रेरितों 2:16)। भजन संहिता में दाऊद के द्वारा जो यीशु के विषय में बोला गया था वह सब पूरा हुआ। यशायाह के 53 अध्याय में जो उसके बारे में कहा गया था वो सब वैसे ही पूरा हुआ। और भी बहुत सारी भविष्यवाणीयां जो यीशु के विषय में हुई थी वे सब पूरी हुई। इसलिये यीशु में विश्वास लाने का यह भी एक पक्का कारण है।

यीशु का जी उठना भी एक बहुत बड़ी घटना थी। भजन के लेखक ने उसके विषय में कहा था, "इस कारण मेरा हृदय आनन्दित और मेरी आत्मा मगन हुई, मेरा शरीर भी चैन से रहेगा। क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा।" (भजन 16:8-9)। यहूदी लोग जानते थे कि यीशु ने अपने विषय में कहा था कि वह मृतकों में से जी उठेगा। उसके चेलों ने कहा था कि हम उसके जी उठने के गवाह है। पतरस ने कहा उसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया जिस के हम सब गवाह है। (प्रेरितों 2:32) प्रेरित पौलुस भी यीशु के मृतकों में से जी उठने के विषय में कहता है, "यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा। और यदि मसीह नहीं जी उठा तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो। यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं। परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है और जो सो गए है, उन में पहिला फल हुआ।" (1 कुरि. 15:16-20)। पिन्तेकुस्त के दिन जिन 3000 लोगों ने बपतिस्मा लिया था, वे जानते थे और विश्वास करते थे

कि यीशु मसीह मृतकों से जी उठा है।

जब मनुष्य ने अदन की वाटिका में पाप किया था तब परमेश्वर ने एक प्रतिज्ञा की थी कि वह संसार में मनुष्य की मुक्ति के लिये प्रभु यीशु को उद्धारकर्ता बनाकर भेजेगा। बहुत पहिले परमेश्वर ने कहा था, "और मैं तेरे और उस स्त्री के बीच में और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा।" (उत्पत्ति 3:15)। पिन्तेकुस्त के दिन इस बात को पतरस ने अपने प्रचार में कहा था (प्रेरितों 2:36)। जो प्रतिज्ञा की गई थी वह पूरी हुई (प्रेरितों 2:38-39)। जो लोग पतरस के प्रचार को सुन रहे थे वे जानते थे कि मसायाह अर्थात यीशु आने वाला है। भविष्यवाणियों में बार-बार कहा गया था कि यीशु आयेगा और लोगों ने इस प्रवचन पर विश्वास किया तथा सुसमाचार पर विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। मित्रो, यीशु में विश्वास लाने के कई कारण हैं। यहूदी लोगों को जब पतरस ने यह कारण बताये तो वे चकित हो गये तथा उनके मन छिद गये। उन्हें यह विश्वास हो गया कि यीशु ही सच्चा जीवता प्रभु है। वही सच्चा उद्धारकर्ता है। बाद में हम देखते हैं कि और लोग भी सामने आने लगे और आज लाखों लोग उसमें विश्वास लाकर बपतिस्मा ले रहे हैं। और यह इसलिये हो रहा है क्योंकि उसमें विश्वास लाने के कई पक्के प्रमाण है। यह कोई बनावटी कहानी नहीं है, बल्कि इतिहास की एक सच्ची घटना है। यदि आप विश्वास करके बपतिस्मा लेगे तो प्रभु आपको अपनी कलीसिया या मण्डली में मिलायेगा। (प्रेरितों 2:47)। यीशु ने अपनी कलीसिया यानि मण्डली को बनाया था (मत्ती 16:18)। यह मण्डली पिन्तेकुस्त के दिन आरंभ हुई थी। जैसे 3000 लोगों ने बपतिस्मा लेकर यीशु को अपना प्रभु माना था, वो आप भी कर सकते हैं।

क्या मार्ग और भी है या केवल एक ही है?

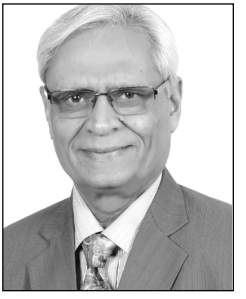

सनी डेविड

मित्रो! किसी भी जगह पर जाने के लिये हमें एक मार्ग की आवश्यकता होती है। प्रभु यीशु ने शिक्षा देकर कहा था कि "संकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस मार्ग से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं'' (मत्ती 7:13, 14)। बाइबल में नीतिवचन की पुस्तक के 14 अध्याय और बारह पद में हम यूं पढ़ते हैं कि "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक दिखाई पड़ता है, परन्तु उसके अंत में मृत्यु ही मिलती है।"

मनुष्य का जीवन इस पृथ्वी पर एक यात्रा के समान है। किसी की यात्रा जल्दी

समाप्त हो जाती है, और किसी की कुछ देर में समाप्त हो जाती है। पर यह बात निश्चित है, कि प्रत्येक मनुष्य की यात्रा एक समय पर आकर समाप्त हो जाती है। और कोई नहीं जानता कि उसकी यात्रा कब पूरी हो जाएगी। पर हम हम में से हर एक यह बात जानता है, कि यह संसार हमारा सदा का घर नहीं है। हम सब यहाँ पर कुछ ही समय के लिये हैं, जो कि देखते-देखते ही बीत जाता है।

लेकिन मनुष्य बात यह है, कि हम सब किस मार्ग पर चल रहे हैं? क्योंकि जिस मार्ग पर हम आज चल रहे हैं, वहीं हमें उस दिशा में और उस अंजाम पर ले जाएगा जो हमारा अंतिम पड़ाव होगा, जहाँ से कभी कोई वापस नहीं आता; और जहाँ पहुचकर हर एक को हमेशा रहना पड़ेगा। यह संसार एक ऐसा स्थान है, जहाँ पर हम जीवन व्यतीत कर रहे हैं पर इस संसार की यात्रा की समाप्ति पर हम जहाँ प्रवेश करेंगे वहाँ "समय व्यतीत" करने जैसी कोई बात ही नहीं होगी। क्योंकि वहाँ पर पहुंचकर मनुष्य वहाँ हमेशा वर्तमान रहेगा। प्रभु यीशु ने सिखाया था कि हमेशा वर्तमान रहने वाले उस मुकाम पर केवल दो ही स्थान है, एक तो वह, जहाँ सब अधर्मी अनंत विनाश का दण्ड पाएंगे, और दूसरा वह, जहाँ धर्मी अनंत जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती 25:46)।

प्रत्येक मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है। जब आरंभ में परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया था, तो परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया था, जैसा कि बाइबल में हम पढ़ते है। (उत्पत्ति 1:26; 2:7)। इसलिये मनुष्य अमर है। किन्तु पृथ्वी पर मनुष्य अमर नहीं है। पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य अमर नहीं है। क्योंकि पृथ्वी पर मनुष्य मरने के लिये ही पैदा होता है। पर अमरता मनुष्य को केवल उसी स्थान पर पहुंचकर मिलेगी, जहाँ मनुष्य कभी मरता नहीं; जहाँ उसका आस्तित्व सदा बना रहेगा। और उसी स्थान का वर्णन करके प्रभु यीशु ने कहा था, कि वहाँ पहुंचकर अधर्मी अनन्त-विनाश का दण्ड भोगेंगे और धर्मी अनंत जीवन में प्रवेश करेंगे। यहाँ इस शब्द "अनंत" पर ध्यान दें। "अनंत" यानि जिसका कभी अंत नहीं होगा। जो हमेशा वर्तमान रहेगा।

सो यह एक बड़ी ही मुख्य और बड़ी ही खास बात है; एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात है; और मैं तो कहूंगा कि हम सबके निकट सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यही है, कि हम में से हर एक इंसान व्यक्तिगत रूप से इस बात पर ध्यान दे, कि मैं आज किस मार्ग पर हूं? अब इस बात को अवश्य ध्यान में रखें, कि मार्ग केवल दो ही हैं, अर्थात् एक तो चौड़े फाटक वाला सकरा मार्ग, जैसा कि प्रभु यीशु ने सिखाया था। अर्थात् एक तो वह मार्ग जिसे मनुष्य ने स्वयं चुना है। और दूसरा वह मार्ग है, जिसे परमेश्वर ने मनुष्य को दिया है। मनुष्य का अपना मार्ग, अविश्वास का मार्ग हो सकता है। जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं; और कहते हैं, कि परमेश्वर नाम की कोई चीज नहीं है। उनके जीवन में परमेश्वर का कोई स्थान ही नहीं है; वे परमेश्वर की बात को मानते ही नहीं है। लेकिन बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने, जिसने मनुष्य को बनाया है, सब मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद परमेश्वर के न्याय का सामना करना नियुक्त किया है। (इब्रानियों 9:27)। जो लोग आज

परमेश्वर को नहीं मानते; उसे स्वीकार नहीं करते, वे लोग उस मार्ग पर चल रहे हैं जो अविश्वास का चौड़ा मार्ग है और जिसका फाटक उन्हें अंत में विनाश को पहुंचाएगा।

किन्तु फिर, कुछ लोग ऐसे हैं, जो परमेश्वर पर विश्वास तो करते हैं, पर उसके वचन को; उसकी इच्छा को; उसकी कही हुई बातों को नहीं मानते। प्रभु यीशु ने कहा था, कि जो मेरी बातों को नहीं मानता वह मुझे तुच्छ जानता है, और जो मेरे वचन को नहीं मानता, उसे मेरा वचन ही न्याय के दिन दोषी ठहराएगा। (यूहन्ना 12:48)। यह अवश्य याद रखें, कि परमेश्वर ने मनुष्य को केवल बनाया ही नहीं है, पर उसने मनुष्य के ऊपर अपनी इच्छा को भी व्यक्त किया हैं उसने मनुष्य को बताया है, कि वह स्वयं अपने मार्ग पर चलकर कहाँ जा रहा है, पर वह यानि परमेश्वर उसे कहाँ ले जाना चाहता है। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने सारे जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परंतु अनंत जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)।

परमेश्वर से सारे जगत से प्रेम रखा। वह आपसे और मुझ से प्रेम रखता है। वह हम सबसे प्रेम रखता हैं और वह चाहता है कि हम सब उस के पास स्वर्ग में पहुंचकर अनंत जीवन पाएं। उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया। उसने अपने ही सामर्थी वचन को एक इंसान बनाकर जमीन पर भेज दिया। और उसी को, अर्थात यीशु मसीह को, मनुष्यों के ही हाथों से एक अपराधी के समान क्रूस पर चढ़वाकर बलिदान कर दिया। यीशु सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। बाइबल में लिखा है, कि वह हमारे पापों के लिये कुचला गया, और हमारे ही पापों के लिये वह मारा गया। (यशायाह 53:1-9)। ताकि उसके द्वारा अपने पापों से मुक्ति पाकर हम परमेश्वर के लेखे में धर्मी बन जाएं, और उसके स्वर्ग में प्रवेश करके अनंत जीवन पाने के योग्य बन जाएं। इसी कारण, प्रभु यीशु ने कहा था, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन में ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना 14:6)। परमेश्वर के पास पहुंचने का केवल एक ही मार्ग है, जिसे स्वयं परमेश्वर ने ही नियुक्त किया है। और वह मार्ग है परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह। वह हमारे पापों का प्रायश्चित और छुटकारा है। वह नरक के अंनत विनाश से बचने का एकमात्र मार्ग है। वही परमेश्वर का मार्ग है।

सो किस प्रकार परमेश्वर के मार्ग को अपनाकर और उस पर चलकर मनुष्य स्वर्ग में अनंत जीवन पाने के योग्य बनता है? बाइबल में लिखा है, कि हर एक व्यक्ति को परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाना चाहिए और अपना-अपना मन फिराकर अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेना चाहिए। और फिर प्रत्येक दिन वैसा ही जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करना चाहिए जैसा कि हम प्रभु यीशु के जीवन से सीखते है। बाइबल में लिखा है, कि "तुम इसी के लिये बुलाए भी गये हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था,

और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था पर अपने आपको सच्चे न्यायी (अर्थात् परमेश्वर) के हाथ में सौंपता था। वह आप ही हमारे पापों को लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, ताकि हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।" (1 पतरस 2:21-24)।

क्या आप आज अपने मार्ग को छोड़कर परमेश्वर के मार्ग पर आने को तैयार है? यदि इन बातों के बारे में आप और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते है तो हमें अवश्य लिखें।

क्या स्वर्ग के बहुत से मार्ग हैं?

जे. सी. चोट

धार्मिक जगत, जिसमें मसीह पर विश्वास करने वाले लोग भी आते हैं और वे भी जो अन्य धर्मों में से हैं, बहुतों का मानना है कि स्वर्ग जाने के बहुत से मार्ग है। वे समझाते हैं कि चाहे बहुत सी सड़कें हो परन्तु वे सब एक ही जगह जाती हैं। सुनने में अच्छा लगता है, परन्तु बाइबल यह शिक्षा नहीं देती। यीशु ने बताया, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना 14:6)। यहाँ यीशु कह रहा है कि स्वर्ग को जाने का मार्ग केवल एक है और वह मार्ग वह स्वयं है।

किसने कहा कि स्वर्ग जाने के बहुत से मार्ग हैं? यीशु ने तो नहीं कहा और न ही वे लोग कहते हैं जो जानते हैं कि बाइबल इस बारे में क्या कहती है। जो लोग स्वर्ग के संबंध में और वहाँ जाने की हर प्रकार की शिक्षा पर विश्वास कर लेते हैं वही कहते हैं कि स्वर्ग जाने के बहुत से मार्ग है।

यह सच है कि संसार में किसी जगह जाने के लिए बहुत से रास्ते होते हैं और बहुत से लोग आत्मिक बातों में भी इसी विचार को लागू करते हैं। वे इस प्रकार बताने की कोशिश करते हैं कि अलग-अलग मार्ग पर जाएं जो उन्हें स्वर्ग में ले जा रहे हैं। परन्तु स्वर्ग में पहुंचाने वाला मार्ग केवल यीशु ही है और उसने किसी और मार्ग को इस योग्य नहीं बनाया है।

परन्तु किसी नगर को जाते हुए बहुत से मार्गों की बात करने का अर्थ है कि उन सब में से आपको कोई भी रास्ता चुनने का अधिकार दिया गया था। इस परिस्थिति में आप वही मार्ग चुनेंगे जो आपके बॉस को पसंद हो। यदि आप दूसरे मार्ग में जाते हैं तो क्या आप अपने बॉस की इच्छा के विरूद्ध जाकर उसे नाराज करके अंत में प्रतिफल से हाथ नहीं धो बैठेंगे? यही बात आत्मिक मार्ग की है। मसीह ने केवल एक ही मार्ग में जाने का अधिकार दिया है। वह मार्ग वह स्वयं है क्योंकि वह संसार में मनुष्यों के साथ रहने के लिए आया ताकि क्रूस पर मरकर, दफनाया जाए और मुर्दों में से जी उठे और मनुष्य को उसके उद्धार का यकीन दिलाए। यदि उसने इसकी

कीमत अदा कर दी है तो उसे पूरा अधिकार है कि वह यह स्पष्ट कर सके कि यदि कोई उद्धार पाना चाहता है और स्वर्ग में उसके साथ रहना चाहता है तो उसके लिए उसे ग्रहण करना आवश्यक है। इस प्रकार तो और कोई भी मार्ग नहीं है।

पवित्र शास्त्र बताता है कि प्रभु लोगों का उद्धार केवल एक ही ढंग से करता है और उन्हें एक कलीसिया के लोग बनाता है। उन्हें एक ही नाम देता है, एक ही प्रकार से अराधना करने को कहता है, एक ही प्रकार से जीवन जीने को कहता है। और उसकी आत्मा को एक ही निवास देता है। यदि यह सब सही है तो स्वर्ग में सब कैसे जाएंगे? क्योंकि वे जो प्रभु की इच्छा को मानकर सब बातों में उसके निर्देशों को मान लेते हैं, वही वहाँ जा सकते हैं।

बाइबल बताती है कि एक ही परमेश्वर है, एक ही प्रभु है, एक ही आत्मा है, एक ही विश्वास है, एक ही बपतिस्मा है, एक ही देह अर्थात कलीसिया है और एक ही आशा है (इफिसियों 4:4-6)। आराधना का ढंग भी एक ही है और जीवन जीने का ढंग भी एक ही है, मरने तक विश्वासी रहना (यूहन्ना 4:24. प्रकाशितवाक्य 2:10)। न्याय भी एक ही होगा और अनन्तकाल के लिए एक ही स्वर्ग और एक ही नरक होगा (इब्रानियों 9:27; मत्ती 25:40)।

यदि यह सब कुछ सच है तो फिर स्वर्ग में जाने के मार्ग बहुत से कैसे होंगे? यह सब क्यों होगा? बेशक प्रभु जानता है कि मनुष्य के लिए उत्तम मार्ग कौन सा है और उसने वह मार्ग तैयार कर दिया है, जो उसके उद्धार के लिए है जो उसे स्वर्ग में ले जाता है। मसीह ने कहा कि बहुत से लोग उस चौड़े मार्ग में से जाएंगे जो विनाश की ओर जाता है, परन्तु थोड़े लोग उस तंग मार्ग में से जाएंगे जो स्वर्ग की ओर जाता है (मत्ती 7:13, 14)।

आप किस मार्ग पर जा रहे हो? हमारी विनती है कि मसीह को अपना मार्ग बना लो, वही वह मार्ग है जो आपको उस घर में ले जाएगा जो स्वर्ग में है और वहाँ आप अनन्तकाल तक परमेश्वर के साथ रहोगे।

धर्म ने आपके लिए क्या किया है?

(2 कुरिन्थियों 6:4-10; 11:16-33)

जेम्स थॉम्पसन

"क्या वे ही मसीह के सेवक हैं?....
मैं उनसे बढ़कर हूं; ...." (11:23)

सब कलीसियाओं के लिए चिंता (12:28)

पौलुस की सेवकाई में मार खाना गुस्से वाली भीड़ में से कहीं बढ़कर था। एक और पीड़ा इससे भी भयंकर हो सकती है, "अन्य बातों को छोड़कर जिन का वर्णन मैं नहीं करता सब कलीसियाओं की चिंता प्रतिदिन मुझे दबाती है" (11:28)। प्रामाणिक सेवकाई में समस्याओं को दफ्तर में नहीं छोड़ा जा सकता। पौलुस ने यह दावा नहीं किया कि उसकी

सेवकाई से उसे मन की शांति मिल गई है। सेवकाई में रात भर जागना शामिल था (तुलना 11:27; 6:5 में "जागते रहने")। कोई भी जो मसीही सेवा में लगा हुआ है सुसमाचार का प्रचार करके कलीसिया की स्थापना में सहायता करके यूं ही छोड़कर नहीं जा सकता।

पौलुस की "सब कलीसियाओं की चिंता" इस तथ्य को दिखाती है कि उसके मिशनरी परिश्रमों का परिणाम पूरे भूमध्य जगत में कलीसियाओं का बनना था। उसके पत्र और उसका लौटकर वहाँ आना याद दिलाता है कि वह उनके जीवनों में छाया रहा था। उसे एक विभाजिक कलीसिया पर दुख हुआ। उनमें से कुछ के सुसमाचार को छोड़ देने पर उसने घोर निराशा व्यक्त की (गलातियों 1:6)। उसने जहाँ तक हो सके संघर्ष बनाए रखा। वह कलीसियाओं के सामने बार-बार आने वाली समस्याओं से जूझने को तैयार रहता था। पौलुस ने व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदारी महसूस की, नई कलीसिया के जन्म के समय केवल वहाँ होने के लिए नहीं। वह दुल्हन के चिंतित पिता के तरह था जो यह सुनिश्चित करना चाहता है कि उसकी बेटी सुरक्षित और संभली रहे (11:2)। वह उस चिंतित माता पिता की तरह था जो अपने बच्चों की निगरानी करता है (12:14)। इस स्थिति में कोई भी "सब कलीसियाओं की चिंता" से भाग नहीं सकता।

जो लोग मसीही विश्वास को केवल ग्राहकों के रूप में देखते हैं वे मसीहियत के साथ आरंभ महसूस नहीं करेंगे जिसमें "सब कलीसियाओं की चिंता" शामिल है। हम एक ऐसा धर्म चाहते हैं जो हमारी चिंता को हर ले, न कि वह जो हमें चिंता दे। हम ऐसा मसीही जीवन चाहते हैं जो शांति और स्थिरता दे, ऐसा नहीं जो हमारी रातों की नीदें उड़ा दे। हम आम तौर पर अपने घर की मण्डली को चुनते हैं क्योंकि इसमें समस्याओं से छुटकारा मिलने की संभावना है। परन्तु पौलुस को मालूम था कि हम समस्याओं से बच नहीं सकते जो हमें गहरी चिंता देती है। 11:28 में पौलुस की बात यह सुझाव देती है कि सच्चे मसीही की एक पहचान कलीसिया की समस्याओं पर चिंता है।

हम में से अधिकतर के लिए अपने आपको कलीसिया के जीवन में शामिल करने पर "विजय को चुनने" की इच्छा करना स्वाभाविक ही है। कई एक से दूसरी कलीसिया में उस कलीसिया की समस्याओं से बचने के लिए और ऐसी कलीसिया को चुनने की उम्मीद से जाते हैं जिसमें कोई समस्या न हो। जिन मण्डलियों को मैं जानता हूं उनमें, दूसरे लोगों में आंतरिक मतभेद से टूट रही कलीसिया के साथ बने रहने और संघर्ष करने को चुना। अन्य ऐसी कलीसियाओं को समपर्पित रहे जो कम होते पड़ोसियों के दुखों को सहती प्रतीत हुई। कुछ मसीही लोग परेशान समुदायों की समस्याओं से पीछा छुड़ाने की बजाय "सब कलीसियाओं की चिंता" करना चुनते हैं।

अपमानजनक पल (11:32, 33)

पौलुस के जीवन में एक अपमानजनक पल खड़ा हो गया। यह दमिश्क में उस समय था जब पौलुस को दीवार की खिड़की में से टोकरी में बिठाकर नगर के पहरेदारों से बचाया गया। यह याद रखा गया क्योंकि पौलुस टोकरी में ले जाए जाकर हंसी का पात्र बन गया था। किसी बड़े व्यक्ति के टोकरी में बचाए जाने की बात देखने वालों को हास्यस्पद लगी होगी। बच जाने वाले मसीही लोगों को "बड़े स्टाइल" की बात करते जिसमें उनका अगुआ नगर छोड़ गया था, शर्म आती होगी। पौलुस के विरोधी एक निर्बल व्यक्ति के रूप में पौलुस का उदाहरण देने के लिए जो कलीसिया के लिए परेशानी था, इसी पल की ओर ध्यान दिला सकते थे। प्राचीन संसार में बहादुर व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा सैनिक पुरस्कार शत्रु के सामने दीवार पर सबसे पहले आने वाले व्यक्ति को दिया जाता था। पौलुस अपने आपको इसके

बिल्कुल विपरीत दिखाता है, वह दीवार के नीचे सबसे पहला था। उसने भीड़ को प्रभावित करने के लिए कोई शक्ति प्रदर्शन या जबर्दस्त भाषण नहीं दिया था। पौलुस ने अपने जीवन की दीनता के मुकुट का घमण्ड करने का साहस किया, ऐसी घटना जो सम्भवतया उसे अपमानित करने की प्रतीक्षा में थी उसके शत्रु ने बतानी थी। निश्चय ही उन्हें लगा कि जो अपमानित और प्रताड़ित थे वह अपनी सेवकाई में परमेश्वर की सामर्थ को नहीं दिखा सकता। पौलुस ने अपनी सेवकाई की इस पूरी सफाई का आरंभ (11:16-33) "मूर्ख बनकर" और अपने आलोचकों को घमण्ड का जवाब घमण्ड से दिया (11:16-22)। हम यह मान सकते हैं कि उनके पास विजयों की अपनी सूची थी परन्तु 11:23-33 में पौलुस अपनी प्राप्तियों के साथ उनके घमण्ड करने को मिलना अस्वाभाविक मानता है। इसके बजाय वह कठिन समयों और असफलताओं की बात बताता है। निर्बलता जिसके लिए उसका उपहास किया जाता है पर ही वह घमण्ड करता है। वह पूछता है, "किस की निर्बलता से मैं निर्बल नहीं होता?" "यदि घमण्ड करना आवश्यक है तो मैं अपनी निर्बलता की बातों पर घमण्ड करूंगा" (11:29, 30)। पौलुस ने अपनी सेवकाई के सफाई के लिए सफलता के संसार के मानक का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया। उसकी सेवकाई की विशेषता कठिन कार्य, रातों में न सोना और अपनी सामर्थ से बढ़कर चुनौतियां थी।

उसका उत्तर उस समय प्रसिद्ध नहीं था न ही यह आज प्रसिद्ध है। हमारे पास अपनी सेवकाइयों के सही होने की पेशकश के लिए और सूचियां हैं। हम अपने शपथ रिज्यूम में और वार्षिक रिर्पोटों में अपनी कमजोरियों को कभी नहीं दिखाते। ऐसी मण्डली की कल्पना करें जो सेवक के रिकॉर्ड पर प्राप्तियों की पौलुस की सूची को समर्थन देते हुए देखें। कार्पोरेशन के नमूने पर बनी कलीसिया सफलता के चिन्हों की मांग करेगी। पौलुस की सूची हमें याद दिलाती है कि कुछ सफल सेवकाइयां कभी ध्यान में नहीं आई हैं। यह संभव है कि कुछ "सेवकाइयां" पौलसु के मानकों से सफल न हो।

निर्बलता में सामर्थ

जब हम उन मानसिक और भौतिक दुखों को जो पौलुस ने अपने जीवन में लिए थे समझ लेते हैं तो हम चकित होते हैं कि यह भंजनशील "मिट्टी का बर्तन" जीवित कैसे रहा? अपर्याप्त चिकित्सीय संभाल, धूप, उधाड़े जाना, भूखा रहना और खतरनाक परिस्थितियों में सफर करते रहना हृष्ट पृष्ठ धावक को हार मानने के लिए काफी था। "बार-बार" वह मरने वाला था, अवश्य कुछ अयोग्यताएं नहीं तो दाग तो अवश्य छोड़ गया होगा। "निर्बलताओं" की सूची इस कारण हमें पौलुस की सहने की असाधारण सामर्थ से चकित करती है। शारीरिक और भावनात्मक थकावट के कई ऐसे अवसर आए जब पौलुस की सामर्थ ने जवाब दे दिया। परन्तु उसे सामर्थ का हमेशा एक भण्डार मिला जो परमेश्वर की ओर से था। अपनी सामर्थ को उण्डेलने पर उसे और सामर्थ दी जा रही थी।

परमेश्वर की भूमिकाएं दर्शाते नाम

ह्युगो मेकोर्ड

"पिता"

पहले ही यह बताया जा चुका है कि परमेश्वर कोई वास्तविक पिता नहीं है। परन्तु, हमारे पिता के रूप में उसकी भूमिका पुराने नियम में अति सराहनीय और

आनन्दित करने वाली है।

इस्राएल परमेश्वर के पहलौठे के रूप में: पिता के रूप में परमेश्वर का पहला सांकेतिक चित्रण इस्राएल के बारह लोगों के हवाले से किया जाता है जिन्हें सामूहिक रूप से एक इकाई अर्थात एक पुत्र के रूप में माना जाता है। "इस्राएल मेरा पुत्र वरन मेरा जेठा है" (निर्गमन 4:22)। फिरौन द्वारा इस्राएल को जिसे परमेश्वर के पहलौठे के रूप में देखा गया था, मिसर छोड़ने की अनुमति देने से इंकार करने पर, प्रभु ने उसे बताया, "इस कारण मैं अब तेरे पुत्र वरन तेरे जेठे को घात करूंगा" (निर्गमन 4:23)। जब परमेश्वर का पुत्र इस्राएल गुलामी की घोर पीड़ा सह रहा था, तो उस राष्ट्र के प्रति परमेश्वर का मोह एक पिता की तरह व्यक्त किया गया, "जब इस्राएल बालक था, तब मैंने उससे प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिसर से बुलाया" (होशे 11:1)। अपने पुत्र में दिलचस्पी लेने और उससे प्रेम रखने वाले पिता की तरह, प्रभु ने इस्राएल को अपनी गोद में लेकर (होशे 11:3) उसे चलना सिखाया।

मसीही लोग परमेश्वर के पहलौठे के रूप में: इस्राएल के अतिरिक्त दूसरी जातियां भी परमेश्वर की संतान थी। सभी जातियां "परमेश्वर का वंश" थी (प्रेरितों 17:29)। परन्तु, इब्राहीम के असाधारण विश्वास के कारण इब्रानी जाति को जो उसका वंश थी, प्रभु द्वारा अपने सारे बच्चों (जातियों) में से पहलौठा पुत्र माना जाता था।

किसी परिवार में पहलौठा होना विशेष सम्मान की बात मानी जाती थी। पहलौठे को न केवल अपने पिता की सम्पत्ति का दोगुना भाग ही मिलता था (व्यवस्थाविवरण 21:17), बल्कि, पहलौठा होने के कारण उसे अपने पिता की सामर्थ का मूल भी माना जाता था। पहलौठे का अपने पिता की "सामर्थ" के रूप में आदर किया जाता था, और उसे सम्मान तथा शक्ति में पहल दी जाती थी (देखिए उत्पत्ति 49:3)। इसलिए, पहलौठे पुत्र को परिवार की शान समझा जाता था।

अपने बच्चों को सम्मान देने की इच्छा से, परमेश्वर ने इस्राएल को सब जातियों में प्राथमिकता दी। वैसे ही, प्रभु मसीही लोगों को सम्मान देने और कलीसिया को अपने पहलौठे लोग कहकर आनन्दित था (इब्रानियों 12:23), जिनके नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं। इस चित्रण में सब लोगों को सृष्टि के आधार पर परमेश्वर की संतान माना गया है परन्तु, नई सृष्टि बनने पर (2 कुरिन्थियों 5:17), मसीही लोगों को परमेश्वर के पहलौठे माना जाता है, जिनसे वह प्रसन्न है।

परमेश्वर की संतान बनना: कोई भी उदाहरण सम्पूर्ण नहीं हो सकता। यद्यपि पिता/पुत्र का उदाहरण बहुत उपयुक्त है, परन्तु पसंद के मामले में इसमें त्रुटि है। एक बच्चा यह नहीं कह सकता है कि वह जन्म लेना चाहता है या नहीं, परन्तु आत्मिक जनम लेने वाले व्यक्ति को यह चुनना पड़ता है कि उसने पिता के परिवार में नये सिरे से जन्म लेना है या नहीं (यूहन्ना 3:3-8)।

परिवार का सदस्य बनने के लिए प्राकृतिक जन्म एक सामान्य ढंग है, परन्तु गोद लेने से भी परिवार का सदस्य बना जा सकता है। लोगों को परमेश्वर द्वारा परिवार में गोद लिए जाने का सांकेतिक चित्र पवित्र शास्त्र में भी लागू होता है (गलतियों 4:4-7)।

वक्तिगत दिलचस्पी: एक ऐसे पिता की कल्पना नहीं की जा सकती है जो आवश्यकताओं को तो पूरा करता हो परन्तु अपने बच्चों में व्यक्तिगत रुचि न लेता

हो। एक अच्छा पिता अपने बच्चों का विशेष ध्यान रखता है। पवित्र शास्त्र जब परमेश्वर की तुलना एक पिता से करता है, तो विशेष पूर्व प्रबंध को शामिल किया जाना आवश्यक है। एक निकम्मा सांसारिक पिता अपने बच्चों को रोटी और मछली के स्थान पर पत्थर और सांप देने की नहीं सोचता। फिर भी यह तो केवल उस स्वर्गीय पिता की एक छोटी सी नकल है, जिसका मन अपने बच्चों की आवश्यकताओं से, पिघल जाता है। उनके दुखी होने पर वह दुखी होता है (यशायाह 63:9)। "जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है" (भजन संहिता 103:13, 140।

बड़ा भाई: पवित्र शास्त्र यीशु को उदाहरण के रूप में सभी मसीहीयों का बड़ा भाई ठहराता है। वह उन्हें भाई कहने से लज्जाता नहीं (इब्रानियों 2:11)। बहुतों में पहलौठा होने के कारण (रोमियों 8:29) अपने छोटे भाइयों तथा बहनों के लिए बोलने में उसे प्रसन्नता होती है। उनकी ओर से वह पिता से बात करता है (1 यहून्ना 2:1)।

बच्चों का चाल-चलन: जैसे बच्चा अपने पिता के गुणों पर जाता है। वैसे ही, परमेश्वर की संतान अपने कामों में अपने पिता की तरह सम्पूर्ण तथा परिपक्व होना चाहती है। प्रिय बालक होने के कारण (इफिसियों 5:1; मत्ती 5:58), वे परमेश्वर की नकल करने की कोशिश करते है। सर्वशक्तिमान प्रभु के पुत्र तथा पुत्रियां होने के कारण, वे शरीर तथा आत्मा की सारी मलिनता से शुद्ध होना चाहते हैं (2 कुरिन्थियों 7:1)। एक योग्य पुत्र "अपने पिता का आदर करता है" (मलाकी 1:6), और यदि उसके पिता को दुख पहुंचे तो सही सोच वाला पुत्र दुखी होता है (इफिसियों 4:30)।

दूसरे बच्चे: माता-पिता का उदाहरण न केवल माता-पिता और बच्चे के सीधे सम्बंध को ही दर्शाता है बल्कि बच्चों के एक दूसरे के साथ सीधे संबंध को भी दिखाता है। "एक ही पिता" (मलाकी 2:10) के बच्चों में एक दूसरे से धोखा करने की बात अविचारणीय है। परमेश्वर से प्रेम करने का दावा करने वाला व्यक्ति यदि परमेश्वर के बच्चों से प्रेम नहीं करता है तो वह झूठा है (1 यूहन्ना 4:20)। जो पिता से प्रेम करता है, वह पिता के दूसरे बच्चों से भी प्रेम करेगा (1 यूहन्ना 5:1)।

"पति"

मनुष्य के साथ संबंध में परमेश्वर ने जिस घनिष्ठ और व्यक्तिगत उदाहरण का इस्तेमाल किया है वह (ईश) अर्थात "पति" का है। पति और पत्नी में एकता ओर साथ-साथ चलना इतना आवश्यक, लाभदायक और आनन्ददायक है अर्थात पति/पत्नी को सबसे प्रिय उदाहरण बना देता है।

इस्राएल: मंगेतर के रूप में इस्राएल की तुलना उस स्त्री से की जाती है जिसने "अपनी जवानी के दिनों में" (होशे 2:15) प्रभु से प्रेम किया था और विवाह का उसका प्रस्ताव भी स्वीकार किया था (यिर्मयाह 2:2)। वह उसके पीछे उस जंगल में चलने को तैयार था जहाँ भूमि जोती बोई न गई थी (यिर्मयाह 2:2)।

वेश्या के रूप में इस्राएल का गंभीरता और भरोसे योग्य प्रेम से आरंभ हुआ विवाह कष्टदायक हो गया था। पत्नी ने एक बार नहीं, बल्कि कई बार, बहुत से प्रेमियों के साथ "व्यभिचार किया" (यिर्मयाह 3:1)। परमेश्वर का कहना था कि "इसमें तो संदेह नहीं

कि जैसे विश्वासघाती स्त्री अपने प्रिय से मन फेर लेती है वैसे ही हे इस्राएल के घराने तू मुझ से फिर गया है" (यिर्मयाह 3:20)। इस्राएल की मूर्तिपूजा, उसकी अपवित्र नैतिकताएं और उसकी सारी बेईमानी को परमेश्वर ने अपने (ईश) अर्थात अपने पति के विरूद्ध व्यभिचार माना गया था। प्रभु का ऐलान था कि विवाह के बंधन में "यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली" (यिर्मयाह 31:32)। परमेश्वर से दूर होकर लोगों ने "वेश्या का सा" काम किया था (होश 1:2)।

प्रभु का कहना था कि इस्राएल "नथ और हार पहने अपने यारों के पीछे जाती और मुझको भूले रहती थी" (होशे 2:13)। उसने "पराये पुरुषों को अपने पति की संती ग्रहण" (यहेजकेल 16:32) करके ऐसे काम किए "जो निर्लज्ज वेश्या ही के काम है" (यहेजकेल 16:30)। हे इस्राएल, "तू" केवल इस बात में अलग है (यहेजकेल 16:34) कि किसी से दाम लेने के बजाय "तूने अपने सब मित्रों को स्वयं रुपये देकर और उनको लालच दिखाकर बुलाया है" (यहेजकेल 16:33)। इस्राएल एक ऐसी स्त्री की तरह बन गया "जो अपने पति और लड़के बालों से घृणा करती थी" (यहेजकेल 16:45) और व्यभिचार करती थी (यहेजकेल 16:38)।

इस्राएल में यद्यपि व्यवस्था के अनुसार एक पति को किसी दूसरे पुरुष की पत्नी बन जाने वाली अविश्वासी स्त्री को दोबारा अपनाने की मनाही थी (व्यवस्थाविवरण 24:1-4), परन्तु इस्राएल के पति ने बिनती की, "...मेरे पास लौट आ" (यिर्मयाह 3:1;)। उसने निवेदन किया कि "लौट आ....," "क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूं" (यिर्मयाह 3:14क)। इस्राएल का पति अर्थात परमेश्वर अभी भी अपनी अविश्वासी पत्नी से प्रेम करता था। उसने उसके दिल से बात की (होशे 2:14) और एक नया प्रस्ताव रखा "जैसी अपनी जवानी के दिनों में अर्थात मिसर देश से चले आने के समय कहती थी" (होशे 2:15)। इस नये विवाह का आधार अधिक मजबूत है:

> और मैं सदा के लिए तुम्हें अपनी स्त्री करने की प्रतिज्ञा करूंगा,
> और यह प्रतिज्ञा धर्म, और न्याय, और करुणा,
> और दया के साथ करूंगा।
> और यह सच्चाई के साथ की जाएगी,
> और तू यहोवा को जान लेगी (होशे 2:19, 20)।

"उस समय तू मुझे ईशी (अर्थात हे मेरे पति) कहेगी" (होशे 2:16)।

मन को छू लेने वाला उदाहरण होशे की पुस्तक की अति संभावित व्याख्या यह है कि परमेश्वर (जिसका प्रतिनिधित्व होशे करता है) एक छल खाया हुआ पति था जिसे उसके मन के अयोग्य पत्नी (जिसका प्रतिनिधित्व गोमेर करती है) थी। यदि वह व्याख्या सही है, तो होशे ने आरंभ में एक निष्कलंक पत्नी से विवाह किया था, जैसे परमेश्वर ने इस्राएल के साथ धीरे-धीरे, इस्राएल की तरह, गोमेर अविश्वासी बन गई, यहाँ तक कि उसने वेश्यापन में ही बच्चों को जन्म दिया था। इतना व्यभिचारपूर्ण व्यवहार होने के बावजूद होशे अपनी प्रिय गोमेर के लौटने पर फिर से उसे अपनाने को तैयार था। अधिकांश पति अपनी पत्नी से इतना प्रेम नहीं करते जितना होशे ने किया। व्यवस्था के आधार पर, वह गोमेर को तलाक दे सकता था या उस पर पथराव कर सकता था (देखिए व्यवस्थाविवरण 22:22; 24:1) परन्तु इसके बजाय, उसने उसे प्रिय बनाने की बातें की।

गोमेर ने होशे की बिनती मान ली और उसके पास लौट आई; परन्तु वह दूसरी बार फिर

अन्य प्रेमियों की खोज करती हुई भटक गई। होशे 3:2 में हम देखते हैं कि गोमेर में प्रेमियों को आकर्षित करने की योग्यता धीमी पड़ गई थी; निराशा में उसने भोजन और रहने के स्थान के लिए अपने आपको एक दास के रूप में बेच दिया। होशे ने, जो अभी भी बेवफा गोमेर से प्रेम करता था, उसे गुलामी से निकालने के लिए खरीदने की इच्छा की। उसके पास केवल आधा धन अर्थात चांदी के पन्द्रह शेकेल थे (देखिए निर्गमन 21:23); परन्तु उसके पास होमेर और आधे जौ थे, जो उसके चांदी के साथ मिलकर गोमेर को स्वतंत्र कराने के लिए काफी थे। होशे जिसने बेवफा गोमेर से सच्चा और पक्का प्रेम किया था, अविश्वासी इस्राएल के साथ परमेश्वर के गहरे और सच्चे प्रेम का चित्रण है।

कलीसिया जो यीशु की है: जिस प्रकार पुराने नियम में इस्राएल के प्रभु के साथ विवाहित होने को दर्शाया गया है, वैसे ही नये नियम में कलीसिया को बताया गया है। मसीह को अथाह और मजबूत प्रेम करने वाले के रूप में दिखाया गया है जो अपनी दुल्हन अर्थात तेजोमय कलीसिया को दाग और धब्बे के बिना खरीदने के लिए अपना सब कुछ त्याग देता है।

नये नियम में पति के रूप में मसीह के दो पहलू मिलते है। एक में वह प्रेम याचना करने वाला प्रेमी है और दूसरे में पानी बपतिस्मा लेने के समय उसका प्रस्ताव स्वीकार करता है (प्रकाशितवाक्य 19:7-9)। इस उदाहरण के अनुसार, बपतिस्मा यीशु के प्रस्ताव को स्वीकार करना और विवाह के लिए मंगनी की एक निशानी है। सम्पूर्ण मसीही जीवन ही धार्मिकता में रहकर विवाह के दिन के लिए तैयारी करना है जब मेम्ने का विवाह आने पर उसकी मंगेतर अपने आपको तैयार पाएगी। फिर, विवाह के बाद, वे स्वर्ग में सदा आनन्द पति के रूप में मसीह के दूसरे उदाहरण में, बपतिस्मे के समय एक पापी का विवाह यीशु से हो जाता है (इफिसियों 5:22-32; रोमियों 7:4)। फिर उस मसीही का काम बेदाग और निष्कलंक होकर एक अच्छी पत्नी के रूप में जीवन बिताना होता है।

ईश अर्थात "पति" के रूप में परमेश्वर का उदाहरण निश्चय ही बाइबल में सबसे अधिक उत्साहित करने वाला है जिसे, पवित्र आत्मा ने पुराने और नये दोनों नियमों में डाला है।

"उद्धारकर्त्ता"

बाबुल में निर्वासित, उदास और निराश यहूदी यशायाह की पत्री पढ़कर कितने रोमांचित हुए होंगे कि परमेश्वर उनका मोशिया अर्थात उनका उद्धारकर्त्ता होगा। परमेश्वर ने अपने लोगों को दासता में छुड़ाने और उन्हें उनके अपने देश में बहाल करने की प्रतिज्ञा की थी। यशायाह 43:3-7 में कहा गया है:

> क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूं,
> इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्त्ता हूं।
> पुत्रों को दूर से
> और मेरी पुत्रियों को पृथ्वी की छोर से ले आओ।
> हर एक को जो मेरा कहलाता है,
> जिसको मैंने अपनी महिमा के लिए सृजा,
> जिसको मैं ने सृजा और बनाया है।

परमेश्वर पिता, ने जो स्वर्ग की सभी योजनाओं में यीशु के साथ था, यीशु के द्वारा बाबुल में यहूदियों में मोशिया के रूप में अपना काम किया था। यीशु कहलाने से बहुत

पहले यह भविष्यवाणी की गई थी कि वह "याकूब के गोत्रों को उठाएगा" और "इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले" आएगा (यशायाह 49:6)। यीशु ने भविष्यवाणी को पूरा किया जब "फारस के राजा कुस्त्रू का मन उभारा.... इसलिए उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया" (एज्रा 1:1) जिससे यहूदियों को अपने देश लौटने की अनुमति मिल गई थी।

परमेश्वर ने मोशिया के रूप में यीशु के द्वारा केवल यहूदियों को विदेशी दासत्व से ही नहीं बचाया बल्कि उससे भी बढ़कर एक आत्मिक मार्ग की भविष्यवाणी की, उसने अन्य जातियों को पाप के अंधेरे से बचाना था। परमेश्वर ने यीशु से कहा, "मैं तुझे अन्य जातियों के लिए ज्योति ठहराऊंगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए" (यशायाह 49:6)। इस अदभुत योजना को पूरा करने के लिए परमेश्वर ने मरियम से जन्म लेकर मनुष्य का रूप धारण किया था। उसके मिशन की भविष्यवाणी के अनुसार उसका नाम यीशु अर्थात उद्धारकर्त्ता था, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाने आया था।

देह में परमेश्वर अर्थात मसीह में परमेश्वर बाबुल में पूरे हुए पिछले एक मिशन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण मिशन के लिए बैतलहम में आया था। मोशिया के रूप में परमेश्वर, हाँ यीशु के रूप में वह पाप भरे दोष के बंधन से लोगों को बचाने के लिए आया था। ईश्वरीय योजना और भविष्यवाणी के अनुसार, उद्धारकर्त्ता के रूप में परमेश्वर का काम यहूदियों से आगे निकल जाना था। उसके लिए सीमा में रहना "हल्की सी बात" होनी थी (यशायाह 49:6) और परमेश्वर के प्रेम की लम्बाई और चौड़ाई और गहराई और ऊंचाई की व्यापकता से बहुत कम होनी थी। सचमुच, कुरनेलियुस के घराने से आरंभ करके, जाति-जाति के लोग उद्धार के आनन्द का जश्न मनाते हुए "(उसका) धर्म और सब राज (उसकी) महिमा देखेंगे" (यशायाह 62:2)।

परिणाम यह है कि मोशिया, यीशु अर्थात उद्धारकर्त्ता और परमेश्वर एक शिखर पर पहुंच चुका है। मसीह के नाम पर हर एक घुटने को झुकना चाहिए और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ को अंगीकार कर लेना चाहिए कि यीशु ही प्रभु है (देखिए फिलिप्पियों 2:10, 11)।

यीशु की सफाई में

बिल निक्सन

हम से कहा गया है, "पर मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछें, तो उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ" (1 पतरस 3:15)। पौलुस को "सुसमाचार के लिए उत्तर देने को ठहराया गया" था (फिलिप्पियों 1:16)। यूहन्ना 2 के आधार पर यीशु पर तीन आरोप लगे थे जिनका उत्तर दिया जाना आवश्यक है, (1) कि वह अपनी माता के साथ रूखा था; (2) वह एक सन्यासी था; (3) और उसने सामाजिक अवसरों पर शराब पीने को प्रोत्साहित किया।

(1) काना गलील की शादी की दावत में उसकी माता ने उससे कहा था, "उनके पास दाखरस न रहा" (यूहन्ना 2:3)। जबाव में यीशु ने कहा, "हे महिला मुझे तुम से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया।" मत्ती 15:28, लूका 22:57 और यूहन्ना 19:26 में इस्तेमाल हुआ शब्द "हे स्त्री या हे नारी" किसी भी प्रकार से अपमानजनक नहीं है। परन्तु इसके लिए स्थानीय भाषा में कोई मेल खाता संतोषजनक शब्द नहीं है। परन्तु अधिकतर अनुवादकों ने "स्त्री" शब्द का इस्तेमाल किसी भी वयस्क महिला के अर्थ में किया है। जब यीशु क्रूस पर था तो उसने अपनी माता को "हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है" कहकर सम्बोधित किया था। इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है और यहाँ वह अपनी मृत्यु के बाद अपनी माता के लिए गहरी चिंता को दिखा रहा है।

(2) सन्यासी की एक परिभाषा है कि जो भिक्षु या वैरागी वाला जीवन बिताता हो। यीशु का जीवन बेशक ऐसा नहीं था बल्कि उसने लोगों के बीच में रहकर और उनहें अपने जीवन और शिक्षा से प्रभावित करते हुए दिखाया कि "पृथ्वी का नमक और जगत की ज्योति" होने का क्या अर्थ है। उसने काना के विवाह के इस भोज में भाग लेकर विवाह को प्रोत्साहित किया; इस प्रकार परमेश्वर की तरह वह मनुष्यों के सामान्य जीवन को महिमा देते हुए परिवार के दायरे में था। वह दावतों में जाता था, दाखरस पीता यानि अंगूर का रस और उपयुक्त समय पर आनन्द को दिखाने का विरोध नहीं करता था।

(3) यीशु पर आमतौर पर कभी कभार सामाजिक अवसरों पर शराब पीने को प्रोत्साहित करने का आरोप लगाया जाता है। क्या उसने इस दावत के लिए पानी को 108 और 162 गैलन शराब में परिवर्तित किया था? यह विचार ही बेहूदा है। दाखरस के लिए शब्द ओन्स का अच्छा और बुरा दोनों का उपयोग हैं। अच्छा उपयोग : दाखरस पौष्टिक थी और पानी मिलाए जाने पर अल्कोहल रहित होती थी।

यह व्यक्ति की समृद्धि को दिखाती थी, जैसे गुच्छे में दाखमुख (यशायाह 65:8)। इसके गलत उपयोग को मतवाला होने के विरूद्ध कई चेतावनियां देकर समझाया जाता है, जैसे नीतिवचन 20:1; 23:29-35 और इफिसियों 5:18, भोज के प्रधान की तरह हम भी यही निष्कर्ष निकालते हैं कि "अच्छा दाखरस अल्कोहल रहित था।" क्या मनाही करने वाले ने अपनी ही शिक्षा का विरोध करके उसके लिए प्रोत्साहित करना था जिससे लोग मतवाले हो जाते हैं।

सच सच्चाई नहीं बोलता

बायरन निकोल

सच का बड़ा महत्व है। वास्तव में सच इस संसार की सबसे कीमती चीजों में से एक है। सच इतना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने अपने आपको इसी से मिलाया। प्रभु ने कहा, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" सुलैमान की बुद्धि ने उसे सच के महत्व को समझने में सहायता

की। उसने समझाया कि "सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं...." (नीतिवचन 23:23)। अपनी इतनी जबर्दस्त कीमत के बावजूद सत्य यदि दबा रहे और इसका पता न चले तो यह किसी काम का नहीं रहता। सत्य खुद नहीं बोल सकता, यानी यह अपनी ओर से नहीं बोल सकता, यानी यह वह नहीं कह सकता जो यह कहना चाहता है, यानी यह खुद को जता नहीं सकता, बल्कि यह दूसरों पर निर्भर है कि वे इसके लिए कुछ करें।

"तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (यूहन्ना 8:32)। ध्यान दें कि यीशु ने यहाँ कहा कि सच आजादी दिलाता है। आजादी संसार के हर व्यक्ति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसका मतलब यह हुआ कि सत्य सबसे महत्वपूर्ण है।

कलीसिया पर दूसरों पर सत्य को प्रकट करने की जिम्मेदारी है। यीशु ने हमें सारी सृष्टि की सब जातियों के लोगों को सुसमाचार (यानी सत्य) को बताने और चेले बनाकर उन्हें बपतिस्मा देने की आज्ञा दी है (मत्ती 18:16-20; मरकुस 16:15-16)। यीशु ने अपने चेलों की ओर से पिता से विनती की, "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है" (यूहन्ना 17:17)। यदि लोग सत्य यानी परमेश्वर के वचन के द्वारा पवित्र होते हैं तो उन्हें सत्य का पता होना आवश्यक है। सत्य को स्वर मिलना आवश्यक है और वह स्वर मसीही लोग हैं।

इफिसियों 1:13 में पौलुस कहता है कि सच्चाई का वचन, "तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है।" सच्चाई के वचन को सुने बिना उन इफिसियो के मसीहियों को उद्धार का अवसर नहीं मिलना था। मसीही लोग इसलिए मसीही हैं क्योंकि उन्होंने सत्य को जाना और उसकी आज्ञा का पालन किया है। जो लोग मसीही नहीं है वे मसीही इसलिए नहीं है क्योंकि या तो उन्होंने उस सत्य को जो उन्हें बताया गया था माना नहीं है या उन्होंने सत्य को भुला दिया है।

दाऊद ने घोषणा की थी कि उसने स्वार्थपूर्ण ढंग से परमेश्वर के सत्य को छुपाया नहीं था बल्कि उसने उस सत्य को प्रकट किया था (भजन 40:7-9)। परमेश्वर की संतान होने के नाते आज हम उससे कुछ कम कर सकते हैं? क्या हम अपने प्रर्थाना भवनों में या अपने मनों में ही परमेश्वर के सत्य को आराम से पड़े रहने देना चाहते है, जबकि संसार उस सत्य के उद्धार दिलाने वाले ज्ञान के बिना अनन्तकाल में उलटा लटका हुआ है? हमें सत्य का स्वर बनना ही होगा।

ऐसे लोगों की संख्या बढ़ रही है जिनका मानना है कि पूर्ण और अपरिवर्तनीय जैसी कोई सच्चाई नहीं होती। यह सोचना चकित कर देने वाला है कि ऐसा हो सकता है परन्तु कलीसिया के अन्दर भी ऐसे लोग हैं जो इस भ्रामक सोच में फंस गए हैं। यह सोचना हैरान कर देने वाला है कि कोई भी व्यक्ति जो यह कहता है कि वह परमेश्वर में विश्वास रखता है और बाइबल में विश्वास रखता है, वह यह भी विश्वास रखता हो कि परमेश्वर परिवर्तनीय है यानी वह बदल सकता है और यह कि वास्तव में सच्चाई को जाना नहीं जा सकता। कारण यह है कि तथ्य इतना हैरान कर देने वाला है कि बाइबल सैकड़ों बार "जानना" शब्द तथा इससे जुड़े शब्द रूपों का इस्तेमाल करती है। यदि सत्य पूर्ण नहीं है, यदि हम सचमुच में कुछ भी जान नहीं

सकते तो बेशक हमें बाइबल को पूरी तरह से नकार देना होगा क्योंकि यह तो बार-बार दावा करती है कि हम बहुत सी बातों को जान सकते हैं और यह कि सत्य जो पूर्ण है और अपरिवर्तनीय है यानी न बदलने वाला है।

मसीही लोगों को सत्य का साथ देना आवश्यक है। हमें सत्य का स्वर बनना आवश्यक है। हमें यीशु का साथ देने की अपनी वचनबद्धता के अनुसार जीने को तैयार होना आवश्यक है। याद रखें कि हम या तो उसकी ओर हैं या फिर उसके विरोध में (मत्ती 12:30)। किसी ने कहा है, "जो किसी की ओर नहीं है वह किसी की भी तरफ जा सकता है।" बेशक इस बात में कुछ तो दम है। यीशु और सत्य का साथ देने की जिम्मेदारी हमारे ऊपर है।

यह सच है कि हर मसीही के लिए सत्य का साथ देना और उसकी ओर से बोलना आवश्यक है, परन्तु उनके लिए, विशेषकर जो कलीसिया में ऐल्डरों के रूप में सेवा करते हैं, यह बात खास तौर पर लागू होती है। आज परमेश्वर के लोगों के सामने इतनी बड़ी-बड़ी चुनौतियां हैं, जो कलीसिया के इतिहास में इससे पहले कभी नहीं थी। कृपया इस बात को समझ लें कि हालात आशाहीन नहीं है। परन्तु कलीसिया की भलाई का जिम्मा अधिकतर उन लोगों के ऊपर है जो निगरान है। परमेश्वर की प्रेरणा से दिए वचन ने इनमें से हर किसी को जिम्मेदारी दी है कि वह "विश्वास योग्य वचन जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके और विरोधियों का मुंह भी बंद कर सके" (तीतुस 1:9)। ऐल्डर साहिबान, कृपया सच्चाई का साथ देने और गलत शिक्षा का विरोध करने के लिए नमूना देकर हमारी अगुआई करें। कृपया इन सब बातों को "प्रेम से" करने में हमारी अगुआई करें (इफिसियों 5:15)।

सच चाहे जितना भी बड़ा क्यों न हो, खुद अपनी बात नहीं कह सकता। सच बचा सकता है परन्तु केवल तभी यदि लोगों के द्वारा इसे बताया जाए। परमेश्वर की संतान के रूप में हमारे अन्दर जबर्दस्त सामर्थ है क्योंकि हमारे पास परमेश्वर की सच्चाई है। परन्तु इसे दबा कर, दूसरों को न बताकर और इसका प्रचार न करके हम सच की सामर्थ को कम कर सकते हैं। कितनी बड़ी त्रासदी होगी, यदि हम सच की आवाज नहीं बनते, ताकि वे आत्माएं जिनके लिए मसीह मरा, बचाई जा सके।

स्त्री की भूमिका: इसका क्या अर्थ है कि "वह बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी"?

बैटी बर्टन चोट

"तौभी बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहें" (1 तीमुथियुस 2:15)।

जब भी हम बाइबल में से इस आयत को पढ़ते हैं तो हमारा ध्यान खुद-ब-खुद उत्पत्ति की पुस्तक के अध्याय में वर्णित अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के किए पाप की ओर चला जाता है।

विचार करने वाली बात

"बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी" अभिव्यक्ति के अर्थ को आप कैसे समझाएंगे? बच्चे जनने की प्रतिज्ञा में विश्वास, प्रेम, पवित्रता और संयम कैसे आएंगे?

हव्वा के किए के कारण परमेश्वर ने जब उसे श्राप देते हुए कहा था कि वह स्त्री के जनने की पीड़ा को बहुत बढ़ाएगा और पीड़ा के साथ ही वह बच्चे जनेगी, तो उसने यह भी कहा था कि वह स्त्री और सर्प के बीच, यानी सर्प की संतान और स्त्री की संतान के बीच वैर डालेगा। "वह तेरे (यानी सांप के) सिर को कुचल डालेगा, और तू उस (यानी स्त्री की संतान) की एड़ी को डंसेगा" (उत्पत्ति 3:15)। इसे आने वाले उद्धारकर्ता, जिसने स्त्री से जन्म लेना था, की पहली भविष्यवाणी माना जाता है। इस प्रकार, जिस स्त्री के आज्ञा तोड़ने के कारण पाप और मृत्यु संसार में आए थे, उसी के द्वारा पाप का उपचार कुंवारी मरियम की कोख से यीशु मसीह के जन्म के द्वारा होना था। इस प्रकार बच्चे जनना मनुष्यजाति के आज्ञा मानने के लिए उद्धार का मार्ग बन जाना था। परन्तु इसके साथ ही बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाने के दो और अर्थ हैं, कि यदि वे परमेश्वर की विश्वासयोग्य बनी रहें।

परमेश्वर ने आदम अर्थात् पुरुष को जहाँ परिवार की सांसारिक आवश्यकताएं पूरी करने की जिम्मेदारी दी, वहीं उसने स्त्री को घर-परिवार और बाल-बच्चों की देखभाल का जिम्मा सौंप दिया। 1 तीमुथियुस 5:14 में स्त्री को "विवाह करने, बच्चे जनने और घरबार संभालने, "... की जिम्मेदारी दी गई। तीतुस 2:4, 5 में बुजुर्ग मसीही स्त्रियों से कहा गया कि वे "जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें; और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करने वाली, भली और अपने-अपने पति के अधीन रहने वाली हो....।"

विचार करने वाली बात

किसी महिला को किसी दूसरे द्वारा "अपने पति से प्रेम, अपने बच्चों से प्रेम" करना सिखाने की बात अटपटी सी लगेगी। आपके अपने जीवन में क्या आप को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता पड़ी है? कामकाजी पत्नियों और माताओं और टूटते परिवारों के आज के इस युग में क्या स्वाभाविक बंधन होना कठिन है? क्या "प्रेम" मुख्य रूप में एक भावनात्मक बात है या इसमें एक मां के अपने परिवार की आवश्यकताओं का ध्यान रखने, निस्वार्थ मन से सेवा करने की उसकी भावना, अपनी परवाह किए बिना, निस्वार्थ भावना से ध्यान रखने की उसकी चाह है?

परमेश्वर द्वारा दिए इस कार्य को पूरा करके ही स्त्री उसकी आज्ञा को ईमानदारी से मानकर उसे स्वीकार्य हो सकती है। परिवार और बच्चों की संभाल करने की आज्ञा को किसी भी प्रकार से मनमर्जी से पूरा नहीं किया जा सकता क्योंकि यह स्त्री के लिए छुटकारे की योजना का एक भाग है। इस प्रकार, स्त्री बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वह विश्वास में बनी रहे।

स्त्री के बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाने का दूसरा अर्थ है कि नवजात शिशुओं का पालन-पोषण करने के वर्षों के दौरान उसके अपने आत्मिक जीवन में कई प्रकार की समस्याएं और बाधाएं आएंगी। अपने बच्चों को आराधना के लिए लेकर जाने

वाली स्त्री को उनकी आवश्यकताओं की, उनके चिल्लाने की, उनके शोर मचाने के, उनकी भूख की बेहतर समझ होती है। वह जब भी आराधना, प्रार्थना करेगी उसमें बाधा आएगी ही। हो सकता है कि इस प्रकार से पवित्र लोगों के साथ अराधना के लिए जाते हुए उसके जीवन के कई वर्ष बीत जाएं, जिसमें उसे बच्चों के कारण वह कई बार यह भी ध्यान नहीं रहता कि आराधना में क्या-क्या हुआ था।

घर में ही, उसे अपने बच्चों की रुकवटों और उनकी आवश्यकताओं के कारण प्रतिदिन बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने के लिए समय निकालना कठिन रहा हो सकता है। ऐसे भी दिन आए हो सकते हैं, जब उसे लगा कि उसकी आत्मा संतुष्ट नहीं हुई है, तब निस्वार्थ होने की इस प्रक्रिया में से गुजरते हुए, अपने हृदय में परमेश्वर और उसके वचन को रखते हुए, सीख सकती है, जिससे बाइबल पढ़ने और बिना रूकावट प्रार्थना के लिए मिनट और घण्टे निकालने के अवसर की कमी लगी होगी।

परमेश्वर को मालूम था कि नवजात और नन्हें बच्चों की लाचारी और उनकी आवश्यकता क्या होगी? उसने इन सब आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्त्री को, परमेश्वर की सृष्टि को विनम्रता, धीरज, कोमल हृदय, महसूस करने वाला मन, अटल प्रेम करने की भरपूरी का गुण दिया है। ये सब बातें स्त्री के स्वभाव में ही है, जहाँ तक पुरुष की पहुंच नहीं हो सकती। एक मां के लिए अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हुए प्रतिदिन परमेश्वर के दिए गुणों में भी बढ़ना और अपने बच्चों के साथ और भी प्रेम और धीरज के साथ और बड़ी समझदारी के साथ व्यवहार करना सीखना अनिवार्य है। ऐसा करने से परमेश्वर द्वारा उसे दिए गए कार्य को पूरा करके वह अपने जीवन को समृद्ध तथा भक्तिपूर्ण बनाती है।

विचार करने वाली बात

बच्चों के मन और व्यक्तित्व को उनकी माताओं के द्वारा कैसे आकार दिया जाता है? माताओं के मन और व्यक्तित्व को बच्चों द्वारा कैसे आकार दिया जाता है? क्या यह रिश्ता मां ओर बच्चे दोनों के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना का भाग था?

परन्तु उन कठिन समयों में उसे विश्वासी बने रहना अनिवार्य है। बिना रूकावट के आराधना के बहुत कम अवसरों के बावजूद, बाइबल अध्ययन के लिए समय निकालकर परमेश्वर के वचन की अपनी आत्मिक भूख को न मिटा पाने के बावजूद, इस सच्चाई के बावजूद कि उन वर्षों के दौरान उसका अधिकतर जोर और धारणाएं दो से पांच साल के बच्चों के स्तर के ही रहे होंगे, उसे परमेश्वर के साथ अपने निजी संबंध पूरी तनदेही के साथ बनाकर रखना आवश्यक है। मातृत्व की कई चुनौतियों का सामना करते हुए उसे सीखना अनिवार्य है:

परमेश्वर में गहरा विश्वास
उसकी संभाल पर और अधिक निर्भरता
उसके लिए और जोश भरा प्रेम
और अधिक पवित्रता और
निश्चय ही आत्मसंयम के अनुशासन को व्यवहार में लाने का पर्याप्त अवसर।

उसमें यह गुण होने क्यों आवश्यक है? क्योंकि यदि उसका अपना संबंध परमेश्वर के साथ नहीं है जिसमें जीवन के महत्वपूर्ण समयों में चुनौतियों का सामना करने के बावजूद उसने केवल परमेश्वर पर भरोसा रखा है, तो वह अपने बच्चों को

कैसे सिखा सकती है कि वे परमेश्वर पर भरोसा रखें। परन्तु बच्चों की आत्मिक अगुआई करते और अपनी उन्नति के लिए प्रयास करते हुए वह एक ऐसा मजबूत आत्मिक जन बन जाएगी जो जीवन की सब चुनौतियों का सामना परमेश्वर के सामने समर्पण और विश्वास के साथ कर सकती है।

"तौभी बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहे।"

जबान को लगाम देना

(याकूब 3:1-12)

बिल हूटन

यह जानना हैरान करने वाली बात है तथा लोग अनुमान लगाते हैं कि औसतन एक व्यक्ति दिन में इतनी बातें करता है कि जिससे लगभग बीस पन्ने टाइप किए जा सकते हैं, यह महीने में तीन सौ पन्नों वाली दो, साल में चौबीस, और पचास साल में 1,200 पुस्तकें बनाने के लिए काफी है। स्पष्टतया बातें करना हमारे जीवन का बहुत बड़ा भाग है। यह इतना बड़ा भाग है कि अधिकतर पाठशालाओं में भाषण देने की योग्यता को सुधारने में सहायता के लिए कोर्स करवाए जाते हैं।

बोलना जीवन का इतना बड़ा भाग है कि हमारा विश्वास हमारे प्रतिदिन के वार्तालाप में लगे होना आवश्यक है। उसे इस प्रेम का इतना ध्यान है कि कइयों ने उसकी पत्री को "मसीही वार्तालाप को बढ़ाना" पर पाठ्य-पुस्तक का नाम दिया है। पत्री की सभी आयतों के लगभग 20 प्रतिशत में हमारे बोलने के किसी न किसी पहलू की बात है।

याकूब 3:1-12 के हमारे पाठ का हवाला उस मार्ग की सबसे विस्तृत चर्चा है, जिसकी बात हम नये नियम में करते हैं। इन आयातों में याकूब गले की नस अर्थात जीभ तक चला जाता है जो मुख्य समस्या है। बीसवीं शताब्दी के मसीही के लिए मानना आवश्यक है इस वचन की समस्या और इससे मेल खाता संदेश ही केवल पुराना नहीं है। हम सभी को कभी न कभी अपनी जबान से दो चार होना ही पड़ता है।

जीभ का महत्व (3:1, 2)

आरंभिक शब्द ही "हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें...' (3:1क) प्रचारकों तथा सिखाने वालों द्वारा वर्षों से गंभीरता से लिए जाते हैं। यह एक चौंकाने वाली बात है; जो याकूब कहता है। पवित्र शास्त्र के अन्य वचनों से यह स्पष्ट लगेगा (इब्रानियों 5:12; इफिसियों 4:11)। कि याकूब सिखाने वालों को निराश नहीं करना चाहता। वह यह कह रहा है कि जिम्मेदारी के साथ उपदेशक जवाबदेही भी मिलती है। इसीलिए वह हमें बताना चाहता है कि उपदेशकों को अधिक दण्ड मिलेगा। स्पष्टता किसी भी व्यक्ति के लिए उपदेशक के काम को खतरनाक मानना आवश्यक है। मसीही उपदेशक को एक बहुमूल्य विरासत मिली है। वह यहूदी रब्बी के पदचिन्हों पर चलता है। कई अच्छे रब्बियों ने लोगों को सिखाने का शानदार काम किया। परन्तु आमतौर पर रब्बियों को इतना अधिक सम्मान दिया जाता था कि उनका घमण्ड सातवें आसमान पर होता था जिससे वे बर्वाद

हो जाते थे। यह सम्मान इतना अधिक था कि जवान यहूदियों को अपने यहूदी रब्बियों के साथ अपने माता-पिता से बेहतर व्यवहार करना सिखाया जाता था। उदाहरण के लिए यदि किसी शत्रु ने नगर को घेर लिया हो और माता-पिता और रब्बी दोनों पकड़े गए हों तो पहले रब्बी को छुड़ाया जाना आवश्यक था। लोगों की ओर से ऐसा सम्मान मिलने से, यह समझना कठिन नहीं है कि रब्बी का अंत कैसे हो सकता है जैसा कि यीशु ने वर्णन किया था (मत्ती 23:27)। वही खतरा आज भी उपदेशकों के सामने हैं, विशेषकर प्रचारकों के सामने। जवान लोग हर गलत कारण के लिए प्रचार की सेवा में सिर के बल होकर आते तो हैं, जिसमें तारीफ, रूतबा और मित्रों और परिवार की ओर से सराहना है, परन्तु तनाव काम और पीड़ा को जो इससे मिलती है जानने पर छोड़ जाते हैं। उन कारणों से बने रहने में सफल होने वाले आमतौर पर आत्मिक रूप में रब्बी की तरह घमण्डी हो जाते हैं।

उपदेशक और प्रचारक अपनी जीभ से पाप करने की परीक्षा में पड़ते हैं। जीभ को वश में रखना इतना कठिन है कि यह आवश्यक है कि हर मसीही अपनी जीभ की चौकसी करता रहे। यह कह कर, "...जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य हैं; और सारी देह जीभ पर लगाम लगा सकती है।" (3:2), याकूब कह रहा है कि उन बातों की सूची में जिन पर नियंत्रण कठिन है जीभ को वश में करना सबसे कठिन बात है। यदि आप अपनी जीभ को वश में कर सकते हैं तो आप किसी भी बात को नियंत्रण में कर सकते हैं।

जीभ पर काबू (3:3, 4)

इसमें शामिल कठिनाई के कारण हर मसीही के लिए जीभ को वश में करने का काम करते रहना आवश्यक है। घोड़े के मुंह में लगाम और जहाज को वश में रखने के लिए पतवार के उदाहरणों पर ध्यान दें, जिनका इस्तेमाल याकूब करता है। लगाम सवार को घोड़े पर नियंत्रण करवाती है। पतवार चालक को जहाज पर नियंत्रण करने के योग्य बनाती है। याकूब की नजर में जीभ शरीर को नियंतित्रत करती है। आयात 5 में वह कहता है, "वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अंग है और बड़ी-बड़ी डींगे मारती हैं....।" पतवार के लिए जहाज पर नियंत्रण रखने या लगाम के लिए घोड़े पर नियंत्रण रखने के लिए, निरन्तर ध्यान देना आवश्यक है। यही बात जीभ पर लागू होती है। हमें जीभ को निरंतर नियंत्रण में रखना आवश्यक है, वरना जीभ देह को जंगल बना देगी।

याकूब के उदाहरण से एक और प्वाइंट बन सकता है। लगाम, पतवार और जीभ छोटे तो हैं पर उन्हें विरोधी शक्तियों पर काबू पाना भी आवश्यक है। लगाम के लिए घोड़े के जंगली स्वभाव पर काबू पाना आवश्यक है और पतवार के लिए लहरों से और जहाज को रोकने वाली धाराओं से लड़ना आवश्यक है। उसी प्रकार से मानवीय जीभ को नियंत्रण में करने और देह की अगुआई के लिए इसे विरोधी शक्तियों पर काबू पाना आवश्यक है। हमारे आस-पास के भीतरी और पापी संसार का पुराना स्वभाव हर कदम पर हम से लड़ता है। घुड़सवार के लगाम को काबू में रखने और मल्लाह के पतवार को काबू में रखने की तरह हमें अपनी जीभ को यीशु के वश में दे देना आवश्यक है। हमें अपने जीवन के प्रभु को अपने होठों का प्रभु बनने देना आवश्यक है। हमें भजनकार की प्रार्थना को सुनना आवश्यक है, "हे यहोवा, मेरे मुख पर पहरा बैठा, मेरे होंठों के द्वार पर रखवाली कर।" (भजन संहिता 141:3)।

जीभ के खतरे (3:5-12)

याकूब ने जीभ को नियंत्रण करने का इतना जबर्दस्त आग्रह इसलिए किया क्योंकि उसे अनियंत्रित जीभ के खतरों का पता है। हमें उन खतरों की जानकारी देते हुए वह अनियंत्रित जीभ की चौकस करने वाली बातें बताता है।

पहले तो यह शरीर को दूषित कर सकती है। याकूब कहता है:

> ...देखो, थोड़ी सी आग से कितने बड़े वन में आग लग जाती है। जीभ भी एक आग है।
>
> जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है, और भवचक्र में आग लगा देती है और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है (3:5, 6)।

वह कह रहा है कि जीभ से होने वाला नुकसान जंगल में लगी आग से होने वाले नुकसान जैसा है, जंगल की आग बेकाबू होकर अंत में जहाँ से आरंभ हुई थी उससे कहीं दूर कीमती जायदाद नष्ट कर सकती है। जीभ भी ऐसा ही कर सकती है। जीभ की एक छोटी सी चिंगारी भड़ककर बेकाबू हो सकती है जहाँ से यह आरंभ हुई थी उससे कहीं दूर लोगों के जीवन नष्ट हो सकते है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि याकूब कहता है कि यह "नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है।" जब हम इस प्रकार से एक दूसरे को नाश करते हैं तो शैतान मन ही मन खुश होता है।

दूसरा जीभ को वश में नहीं किया जा सकता। "क्योंकि हर प्रकार के वन-वशु, पक्षी और रेंगने वाले जन्तु और जलचर तो मनुष्य जाति के वश में हो सकते हैं और हो भी गए हैं। पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है जो कभी रूकती ही नहीं; वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है" (3:7, 8) वह ढंग है जिससे आत्मा ने याकूब को कहने के लिए प्रेरित किया। स्पष्टता लोग अपनी ही जीभ को काबू में रखने के योग्य नहीं है। उस जंगली, बेआराम बुराई को काबू में लाने के लिए उसे नियंत्रण में लाने का काम किसी न किसी को करना ही होगा। जैसे बड़े जहाज को पतवार से चलाया जाता है और पतवार का नियंत्रण मल्लाह के पास होता है। फिर से हमें अपने जीवन के प्रभु से अपने होंठों को प्रभु बनने को कहना आवश्यक है। केवल वही इतना सामर्थी है, जो उस धधकती आग को नियंत्रण में करके उसे ऊर्जा के स्रोत में जोत सकता है।

तीसरा याकूब कहता है कि बेकाबू जीभ मसीही व्यक्ति के विश्वास के साथ अनुपयुक्त ढंग से काम करती है। उसके द्वारा इस्तेमाल उदाहरण बहुत ही स्टीक है, "क्या सोते के एक ही मुंह से मीठा और खारा जल दोनों निकलते हैं" (3:11)। इस उदाहरण के प्रश्न का उत्तर जोरदार ढंग से "नहीं" है। इसके लिए "हां" होने के लिए इसे पूरी रीति से उस सबके विपरीत होना चाहिए जो हमें पता है। याकूब इस उदाहरण को यह पूछकर आगे ले जाता है, "हे मेरे भाइयो, क्या अंजीर के पेड़ में जैतून या दाख की लता में अंजीर लग सकते हैं?" (3:12)। वह मसीही लोगों को जो बात समझाना चाहता है, वह यह है कि मसीही व्यक्ति के लिए रविवार के दिन परमेश्वर की महिमा गाने और फिर पलटकर सप्ताह भर अपने पड़ोसी को गालियां देने के लिए अपनी जीभ के इस्तेमाल से अधिक बेमेल कुछ नहीं है। मसीही व्यक्ति जो श्राप देता, शपथ खाता, या गप्पें मारता

है, वास्तव में उसे समस्या है (नीतिवचन 4:23; मत्ती 15:18)। जो व्यक्ति निकम्मे मुंह, गंदे चुटकुलों, क्रूर बातों और गप्पे मारने के लिए प्रसिद्ध है वह शानदार मसीही लोगों की किसी सूची में नहीं है। क्यों? क्योंकि संसार भी बेकाबू जीभ होने के बेमेल को देख सकता है।

क्या तुम्हारा परमेश्वर खैरात पर जीता है?

ए. डब्ल्यू. टी. एलिसन

परमेश्वर जिसके हजारों पहाड़ों पर अपने पशु हैं (भजन 50:10), उसे दान देने की सोचने की आवश्यकता नहीं है। उसे सिर चढ़ाने या मनाने की आवश्यकता नहीं है। थोड़े उपकार की भेंट के बिना ही वह, पृथ्वीवासियों पर अपनी योजनाओं और उद्देश्यों को पूरा कर सकता है। परमेश्वर क्या चाहता है और किसका हक्कदार है? यह कि उसके बच्चे पूरी तरह से उसे समर्पित हो। वह हमारा पूरा त्याग, सच्चे दिल से समर्पण चाहता हैं। वह चाहता है कि हम अपने जीवन भर, चौबीसों घंटे उसी के लिए जीएं। परन्तु जहाँ तक उसके अभिमान की खुशामंद करने या उसके क्रोध को ठण्डा करने के लिए कभी कभार कुछ उपहार देने की बात है, वह उनके बिना भी अच्छा है। फिर भी आश्चर्य की बात है कि कितने लोगों को लगता है कि परमेश्वर को दान देने की आवश्यकता है या वह हमारी "जूठन" और "उतरन" चाहता है या उसे चाहिए कि हमारे समय, धन, प्रेम, उपासना को हमारे जीवनों की यादगार की निशानी लेकर संतुष्ट हो जाए।

बहुत से लोगों को लगता है कि रविवार के दिन उनके चंदा देने, या किसी बीमार का हाल पूछने जाने या बाइबल क्लास में पढ़ाने से उन्होंने "सप्ताह भर" के लिए भलाई का कम कर दिया है। उन्होंने जरूरतमंद को दिया है और अब उनका विवेक अगली बार अचानक किसी प्राकृतिक अगली बार अचानक किसी प्राकृतिक आपदा यानी ईश्वरीय एमरजेंसी आने तक आराम कर सकता है।

इसके साथ ही सब कुछ हमारा है, समय हमारा है और जैसे हमें अच्छा लगे इसे इस्तेमाल कर सकते है। पैसा हमारा है और हम जैसे चाहे खर्च कर सकते हैं। शरीर हमारा है और हम इसे जैसे हमें अच्छा लगे इस्तेमाल कर सकते हैं। हृदय के परमेश्वर से "खैरात पर पलने वाला परमेश्वर" कितना अलग है। सच्चे मसीही के लिए असली धर्म दान देना नहीं बल्कि पूर्ण रूप में यानी पूरी तरह से अपने आपको उसे सौंप देना है। असली विश्वासी पूरे दिल से उसे ढूंढ़ता है। जो जीवन मसीह में वह जी रहा है उसमें उसने स्वार्थ को मार डाला है और उसका जीवन "परमेश्वर में मसीह के साथ छिपा हुआ है" (कुलुसिस्यों 3:3)। वह "अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से" परमेश्वर से प्रेम करता है (मरकुस 12:30)। उसका पूरा जीवन अपने आपको तैयार करने और मसीह की और बेहतर सेवा करने के लिए लग जाता है। आप परमेश्वर की सेवा कैसे करते हैं? क्या आपका परमेश्वर आपकी "खैरात" पर जीता है या वो आपके दिल पर राज करता है? क्या उसे आज्ञा मानने का प्रतीक ही मिलता है या फिर पूर्ण समर्पण? वह आपके दान पर पलता है या आपके जीवन का मालिक है?

आप "मैं" नहीं कहते

ऐसा नहीं हो सकता कि
आप प्रभु की प्रार्थना कहें
और एक भी बार "मैं" कहें,
ऐसा नहीं हो सकता कि
आप प्रभु की प्रार्थना करें
और एक भी बार "मेरा" कहें,
न ऐसा ही हो सकता है कि आप प्रभु की प्रार्थना करें और
एक दूसरे के लिए
प्रार्थना न करें;
क्योंकि जब आप रोज की रोटी के लिए प्रार्थना करते हैं तो
आपको अपने भाई के लिए भी मांगना आवश्यक है,
क्योंकि अपने हर निवेदन
और प्रार्थना में हम
आरंभ से लेकर अंत तक,
दूसरों के लिए ही मांगते हैं,
जिसमें एक भी बार हम "मुझे" नहीं कहते।

मैं सबसे अनोखे आदमी से मिला

- उसने कहा कि वह विश्वास करता है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, पर वह इसे कभी पढ़ता नहीं है।
- उसने कहा कि कलीसिया अपनी सेवकाइयों में और भी प्रभावकारी हो सकती है, बस इसके सदस्य दिलो जान से सेवा करने वाले हो, पर वह नहीं करता है।
- उसने कहा कि उसे लगता है कि मण्डली के इक्ट्ठा होने से सदस्यों में सुधार और परमेश्वर की महिमा होती है, पर वह कभी संगति में नहीं जाता।
- उसने कहा कि युवा पीढ़ी को दृढ़ आत्मिक मूल्यों की आवश्यकता है, पर वह अपने जीवन से उन्हें नमूना नहीं देता।
- उसने कहा कि कलीसिया उस प्रकार से काम नहीं कर रही है जैसे प्रभु चाहता है कि वह करें, पर वह काम नहीं कर रहा।
- उसने कहा कि उसका विश्वास है कि परमेश्वर प्रार्थनाएं सुनता और उनका उत्तर देता है, पर वह प्रार्थना नहीं करता है।
- उसने कहा कि वह जानता है कि प्रभु दोबारा आ रहा है, पर उसका जीवन ऐसा है मानो प्रभु कभी आएगा ही नहीं।